443
H96
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1537
Tam

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 443

891.431
Sh23J

वन्देमातरम

जालिमों की चाल

यानी

हिन्द में अंगरेजों का दखल

नौजवानो उठो अब लुटेरों को भगाना है ।
अपने पूर्व पुरुषों का बल इन्हें दिखाना है ॥
होकर सन्तान शेरों की पड़े हो क्यों आलस में ।
लगाकर चोट डंके पर हिंद आजाद कराना है ॥

संग्रहकर्ता व प्रकाशक--
द्वारकाप्रसाद शर्मा नरेला निवासी

मारकण्डे प्रेस देहली में छपा
प्रथम बार १०००   मूल्य)॥

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

पागल बंदर

गायन नं० १

चौक प्रथम

सन छब्बीस में यहां पर इक गोरा बन्दर आया था ।
मीठे मीठे नाच दिखाके भारत खूब रिझाया था ॥
लिबरल तो यह समझे थे, 'स्वराज्य' का बंडल लाया था ।
१
और कहां तक कहूँ हम गांधी तक बहलाया था ॥

चौक द्वितीय

सात समन्दर पार मदारी रस्सी खूब हिलाता था ।
२
आंख नाक मटकाता बोली जो फिरंग बतलाया था ॥
३
कुछ लोगों को भारत में गोलमेज का पाठ पढ़ाता था ।
न चली महासभा के आगे तो यह रंग जमाता था ॥

चौक तृतीय

दे दे कर पार्टी मीठी अपना रंग जमाया था ।
इसने भला भारत का दिल में थोथा शौक समाया था ॥
न्यू फैशन का साज सजाके अपना महल बनाया था ।
४
मैं शौक घुसते ही उस दिन उसपर बम्ब चलाया था ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 443
Date 10.12.7/

चौक चतुर्थ

इन बातों को जाने दो अब आगे किस्सा आता है।
असहयोग का मन्त्र चला वह गांधी बढ़ता आता है॥
साथ में अपने वीरों को रणभूमि में लाता है।
उठा बौखला सर उसका अब गांधी नमक बनाता है॥

चौक पञ्चम

इधर करांची उधर पिशावर चित्रांग रंग दिखलाता है।
फिर पटेल का वह इसतीफा इक गुल और खिलाता है॥
हुआ दर्द सर में भारी अब हेग[५] डाक्टर आता है।
नब्ज देख करके उसको "मिक्चर प्रेस[६]" पिलाता है॥

चौक षष्ठम

हुये बन्द अखबार बहुत पर मर्ज वह बढ़ता जाता है।
नये नये अब हुकम[७] निकाले पर दवा न कोई पाता है॥
भूमि टैक्स अरु शराब बंद का इक बवाल और ही आता है।
सुन सुन करके जिसको वह बन्दर थर्राता है॥

चौक सप्तम

कहीं बम्ब फटे कहीं लाठी वर्षी कहीं पिकटिंग नजर में आता है।
बीच घिरा इनमें सबके अपने को इर्विन पाता है॥
नींद न आवे चैन न पावे पागल सा हो जाता है।
सब पागल कह कर चिल्लाते देखके यह चकराता है॥

चौक अष्टम

क्या करूँ मैं जोड रहा कुछ न समझ में आता है ।
यह कह कर हरदम यह भारत में आ पछताता है ॥
सुलह करूँ या दूं इस्तीफा सोचके यह शर्माता है ।
हम भी देखें कब उसको क्योंकर वापिस जाता है ॥

चौक नवम

खूब कटारी बरछी पटकें पर न [illegible] पाता है ।
इधर उधर को उछलें कूदें समझ में जो कुछ आता है ॥
लाठी मारी सर को तोड़ें कहीं गोली चलवाता है ।
आश्रम तोड़े घर को ढावे जमींदार पै रौब जमाता है ॥

चौक दशम

यह सब कुछ करने पर भी साफ नाटता जाता है ।
मार कूटके हमलों को साफ झूठ बतलाता है ॥
बनकर शाँति का पुजारी अशाँति को फैलाता है ।
पागल बन्दर को देखो उलटी धौंस जमाता है ॥

चौक एकादश

८
उधर लार्ड रीदर मेयर नया राग सुनाता है ।
ना छोड़ें हम भारत को साम्राज्य नष्ट होजाता है ॥
९
नया कमीशन साइमन वह अपनी रिपोर्ट छपाता है ।
१०
और सख्त शासन करने गोरों को शेर बनाता है ॥

चौक आदश

यह किस्सा उस बन्दर का कुछ पाठ भी तुम्हें सिखाता है।
भीख मांगने सुलह करने से राज भी वापिस आता है॥
भारत वालो सोचो समझो तुम्हें "आग" बताता है।
गोलमेज का स्वप्न सभी धोखा हमें दिखाता है

———(::)———

कुछ शब्दार्थ

१—महात्माजी ने भी वायसराय के एक नवम्बर वाले भाषण पर जो नेताओं ने अपना मैनीफैस्टो निकाला था, उस पर दस्तखत कर दिये थे अर्थात महात्माजी भी वायसराय के भाषण के चक्कर में आगये थे।

२—इंगलैंड तथा पार्लमेंट

३—राउंडटेबल कान्फरेंस

४—निज़ामुद्दीन वाली बम घटना

५—होम मेम्बर मि० हेग

६—प्रेस आर्डिनन्स

७—प्रेस आर्डिनन्स के अलावा और नये आर्डिनन्स

८—ब्रिटिश कन्ज़र्वेटिव पार्टी का नेता

९—सायमन कमीशन

१०—गवर्नरों को

सत्याग्रही गान

देश पर होवेंगे बलिदान ।
सहेंगे अब ना हम अपमान ॥

हमको निर्बल जान फिरंगी दल करता है मनमान ।
उसके मद का चूर करें यदि हैं भारत सन्तान ॥

मिटादें रण में उनकी शान ।
देश पर होवेंगे बलिदान ॥ १ ॥

धार केशरिया बाना वीर, हरेंगे माता की सब पीर ।
अखिल योधाओं का दल धीर सहेंगे चढ छाती पर तीर ।

करेंगे रिपुओं का अवसान ।
देश पर होवेंगे बलिदान ॥ २ ॥

नोट—यह उपरोक्त गाना सिर्फ़ सत्याग्रहियों का ही गाना है जो मार्चिंग करते हुए अधिक शोभा देगा । आशा है सत्याग्रह अधिकारी इसे अपनायेंगे ।

प्रसादीसिंह "विशेष"

राष्ट्रीय झंडा

प्राण मित्रो भले ही गंवाना। पर न झंडा यह नीचे झुकाना॥
तीन रंगा है झंडा हमारा। बीच चरखा चमकता सितारा॥
शान है ये ही इज्जत हमारी। सर झुकाता इसे हिंद सारा॥
इसपै सब कुछ खुशी से चढाना।
पर न झंडा यह नीचे झुकाना॥ १॥
ये है आजादपन की निशानी इसके पीछे हैं लाखों कहानी॥
ज़िंदा दिल ही हैं इसका उठाते। मर्द हैं इसपर सर तक चढाते॥
तुम भी सारी मुसीबत उठाना।
पर न झंडा यह नीचे झुकाना॥ २॥
अरे क्या भूले हो जलियानवाला या वह डायर का इतिहास काला
गोलियों की लगी जब झ[illegible] थी। नींव आजादी की जब पड़ी थी
याद हो गर वह खूँ में नहाना।
तो न झंडा यह नी[illegible] झुकाना॥ ३॥
और अब भी न क्या हो [illegible]हा है। कौन सुख नींद में सो रहा है॥
लाखों पाते हैं न भर पेट खाना। सच बोलो त[illegible] है जेलखाना॥
ह इसी से छिड़ा यह तराना।
होना आजाद या मिटही जाना॥ ४॥
बस यह करलो अहद मर मिटेंगे पर न इस व्रत से तिलभर हटेंगे
कुछ हो यह मुल्क आजाद होगा उजड़ा गुलशन ये आबाद [illegible]गा

गायेंगे आज से सब ये गाना ।
हिंद होगा न अब जेलखाना ॥ ५ ॥

झंडा यह हर किले पर चढ़ेगा । इसका दल रोज दूना बढ़ेगा ॥
तोपें तलवार बेकार होंगे । सोने वाले भी बेदार होंगे ॥

सब कहेंगे कि सर है कटाना ।
पर न झंडा है नीचा झुकाना ॥ ६ ॥

शांति हथियार होंगे हमारे । पर यह तोड़ेंगे अरि के दुधारे ॥
बस मज़ा हो जो अंग्रेज जागें । लोभ हिंदी हुकूमत का त्यागें ॥

वरना बदला है क्या यह जमाना ।
उनसे बदलेगा सारा ज़माना ॥ ७ ॥

हे प्रभो शक्ति दो धीर हों हम । टेक रक्खें यह सर्वस्व खो हम ॥
हम भी क्या कह उठे सब ज़माना, दूध खोओ न मां का लजाना ॥

प्राण अपने भले हो गंवाना ।
पर न झंडा यह नीचे झुकाना ॥ ८ ॥